♦ **कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।** കവിതയുടെ ആസ്വാദനക്കുറിപ്പ് തയാറാക്കാം.

वसंत के दिन

हिंदी के प्रसिद्ध छायावादी कवि हैं जयशंकर प्रसाद। उनकी कविताओं में प्रेम, प्रकृति-सौन्दर्य, मानवीकरण, काल्पनिकता, कोमलकांत पदावली, मधुरता, सरसता आदि की प्रधानता है। छायावादी गीतिशैली में लिखी गयी मधुऋतु में प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य का सम्मिलित भाव विद्यमान है। वसंतकालीन दिनों की शोभा इस कविता में देख सकते हैं। हम जहाँ रहते है, वहाँ ऊपर आसमान नीचे धरती और बीच में हमारी सुंदर प्रकृति है। कवि के मत में प्रकृति में नित्य पतझड़ के दिन नहीं है। बाद में पेड़-पौधों में नये पल्लव पैदा होंगे। अर्थात् हमेशा मानव निराशा से न रहें। उनके जीवन में भी प्रतीक्षाओं और आशाओं के दिन आएंगे।

नये-नये पल्लवों से भरी लताएँ पौधे और पेड़, मलयानिल की लहरों में झूमते कमल, जवा-कुसुम के समान पूर्व दिशा में प्रभात का आगमन, दिन का राग और ख़ुशी, चंद्रकिरणों से प्रतिफलित धरती,

ओसकणों को छिड़कनेवाला अंतरिक्ष आदि हमारी प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ाते हैं। प्रकृति का सूक्ष्म और सुंदर वर्णन है यहाँ। कवि हमसे बताते हैं कि प्रकृति के इस अद्भुत सौन्दर्य सृजन में कोई बाधा मत डालना। उनको अपना सौन्दर्य हमें दे देने दो। अर्थात् ये सभी प्राकृतिक चीज़ें हमें विरासत के रूप में मिली हैं। उनका संरक्षण हमारा कर्तव्य है। छायावादी कविता के अनुरूप सरल और कोमल पदावली से बनी यह कविता साहित्यक दृष्टि से भी सर्वोत्तम है। जवा कुसुम सी उषा, मानस नयन नलिन, अंधकार का जलधि आदि प्रतीकों से भरी यह कविता लाक्षणिकता में भी बहुत आगे है।